हृदय और धड़कन

वर्ष-6, अंक-64, अप्रैल 20, 2015

CIMS®
Care Institute of Medical Sciences

Price Rs. 5/-

कार्डियोलॉजिस्ट

डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666
डॉ. सत्य गुप्ता	+91-99250 45780
डॉ. विनीत सांख्ला	+91-99250 15056
डॉ. जयराम प्रजापति	+91-82386 44222
डॉ. गुणवंत पटेल	+91-98240 61266
डॉ. केयूर परीख	+91-98250 66664
डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107
डॉ. उर्मिल शाह	+91-98250 66939
डॉ. हेमांग बक्षी	+91-98250 30111
डॉ. अनिश चंदाराणा	+91-98250 96922

कार्डियक सर्जन

डॉ. धवल नायक	+91-90991 11133
डॉ. मनन देसाई	+91-96385 96669
डॉ. धीरेन शाह	+91-98255 75933

पिडियाट्रिक और स्ट्रकचरल हार्ट सर्जन

डॉ. शौनक शाह	+91-98250 44502

कार्डियोवास्क्युलर, थोरासीक और थोराकोस्कोपीक सर्जन

डॉ. प्रणव मोदी	+91-99240 84700

कार्डियक एनेस्थेटिस्ट

डॉ. हिरेन धोलकिया	+91-95863 75818
डॉ. चिंतन शेठ	+91-91732 04454
डॉ. निरेन भावसार	+91-98795 71917

पिडियाट्रिक कार्डियोलॉजीस्ट

डॉ. कश्यप शेठ	+91-99246 12288
डॉ. मिलन चग	+91-98240 22107

निओनेटोलोजीस्ट और पीडियाट्रीक इन्टेन्सीवीस्ट

डॉ. अमित चितलीया	+91-90999 87400

कार्डियाक इलेक्ट्रोफिजियोलोजीस्ट

डॉ. अजय नाईक	+91-98250 82666
डॉ. विनीत सांख्ला	+91-99250 15056

शीराओं की बिमारीयां

जिस प्रकार धमनीया हृदय से शुद्ध रक्त को पुरे शरीर को पहुंचाती है उसी प्रकार शीराये अशुद्ध रक्त (रक्त जिसमें से ओक्सिजन का उपयोग हो चुका होता है) को वापस हृदय तक पहुंचाने का काम करती है । धमनीयो में रुकावट आने से हार्ट अटैक, लकवा व पावों का काला पडना जैसी बिमारीया होती है उसी प्रकार शीराओ में रक्त के संचार में रुकावट या अनियमित रक्त के प्रवाह से भी कई तरह की बीमारीयां पैदा हो सकती है । यहां पर हम शीराओ में होने वाली विभिन्न प्रकार की बीमारीयों का विवरण व चर्चा करेगें ।

शीराओ की बीमारीयो के प्रकार व उपचार

1. शीराओ में रक्त का धीरे बहना या वापस पीछे की और जाना तथा घाव हो जाना (Venous Insufficiency or Venous Stasis Ulcers)

पाव की शीराओ में रक्त गुरुत्वाकर्ण शक्ति के विरुद्ध उपर की और जाता है इस प्रक्रिया में पांव की मासपेशीयो का संकुचन होना बहुत ही महत्वपुर्ण माना जाता है, साथ ही साथ वन वे वाल्व रक्त को वापस पीछे नही आने देते है इससे शीराओ में रक्त एक ही दिशा में बहता है ।

पांव की मांसपेशीया में कसरत की कमी होने से (लम्बे समय तक किसी बिमारी की वजह से आराम करना), इसकी संभावना काफी बढ जाती है, साथ ही साथ लम्बे समय तक रक्त का प्रवाह कम होने की वजह से शीराओ के अंदर के वाल्व भी खराब हो जाते है तथा रक्त पीछे की और बहने लगता है जिससे पांव का रंग शुरुआतमें गहरा होकर तत्पश्चात घाव भी बन सकता है ।

लक्षण

१. पावो में सुजन आना ।
२. पावो की चमडी का लाल हो जाना एवं खुजली आना ।
३. उपरोक्त लक्षण के साथ पावों में घाव भी बन जाना ।
४. सामान्य ईलाज से पांव के घाव का न भरना ।

ईलाज

१. सोते समय पावो को थोडा उपर रखना
२. पावो की कसरत नीयमीत रुप से करना
३. चलते समय पावो में बेन्डेज (क्रेप बेन्डेज) का इस्तेमाल करना
४. अगर घाव हो जाये तो उसका तुरंत से वेस्क्युलर सर्जन को दिखाकर उपचार करवाना चाहिए।

2. वेरीकोज वेन (शीराओ का अप्राकृतिक रुप से फुल जाना-Varicose Vein)

पांव की चमडी के तुरंत नीचे वाली शीराये फुल जाती है तथा अप्राकृतिक तरीके से चमडी पर फैली हुई दिखाई देती है । वैसे तो यह कोई तकलीफ पैदा नही करती है लेकीन लम्बे समय तक रहने से चमडी गहरी रंग की होकर उसमें खुजली चालु हो सकती है तथा दिखने में भी बहुत बदसुरत दिख सकती है । इस बीमारी का मुख्य कारण पांव के उपर की शिराओ के अंदर का वाल्व खराब होना माना जाता है ।

उपचार :

१. बहुत कम फुलाव वाले मरीज केवल बेन्डेज से काम चला सकते है ।

वेरीकोज वेन के ईलाज की प्रक्रिया

उपचार के पहले | उपचार के बाद

२. बहुत ज्यादा फुली हुई शीराओ के लिये एक नये तरीके का केथेटर एब्लेशन नामक पद्धति (Varicose Vein Ablation by Laser or Radio frequency Waves) से पुरा इलाज किया जा सकता है ।
३. इस नई पद्धति के ईलाज की असर जल्दी होती है तथा वापस होने की संभावना भी बहुत कम होती है ।

3. शीराओ में रक्त का थक्का बन कर बंद हो जाना (डीप वेन थ्रोम्बोसीस, DVT)

कभी कभी शीराओ में रक्त गाडा हो कर जम जाता है उससे पांव में काफी सुजन आ जाती है । इसका मुख्य कारण किसी बिमारी की वजह से काफी लंबे समय तक आराम करना माना जाता है ।

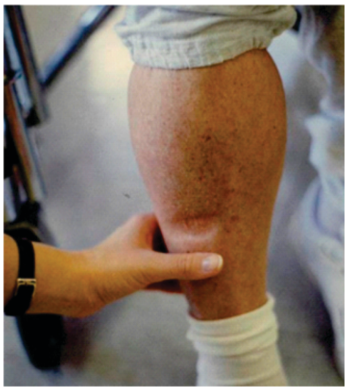

डीप वेन थ्रोम्बोसीस (DVT) होने के मुख्य कारण व परीस्थीतीया

१. लम्बे समय तक बैठना (जैसे लम्बी दुरी की हवाई यात्रा) या कोई प्रकार का व्यायाम न करना
२. मोटापा
३. हार्मोन थेरापी या बर्थ कंट्रोल पील्स का उपयोग करना
४. कुल्ले, घुंटने, पाव, पेट व छाती के ऑपरेशन के तत्पश्चात
५. धुम्रपान करना
६. शरीर की कोई भी मुख्य हड्डी का टुट जाना व उसके इलाज के बाद रीकवरी के दौरान
७. केन्सर के इलाज के दौरान
८. वंशानुगत रक्त के थक्के बनने की समस्या
९. लकवे या कीसी अन्य बीमारी की वजह से लम्बे समय तक पलंग पर रहना
१०. गर्भावस्था के दौरान
११. बहुत ज्यादा वेरीकोझ वेईन का होना

लक्षण :

१. पांव का सुज जाना तथा दर्द होना
२. पांव का लाल व काला पड जाना
३. पांव में घाव पड जाना
४. लम्बे समय तक इसका इलाज ना करवाये तो यह जानलेवा बीमारी पल्मोनरी एम्बोलीझम भी पैदा कर सकती है ।

उपचार :

प्रारंभिक अवस्था में सुजन कम करने की दवा व एन्टीबायोटीक दवा से मरीज को आराम मिलता है । इसके साथ ही खुन को पतला करने का इंजेक्शन व गोलीया चालु करनी पडती है । 50 प्रतिशत लोगो को इन्जेकशन व गोलीयो से काफी आराम हो जाता है ।

जिन लोगो को दवाई से आराम नही होता है तो उनके लिये नवीन तकनीकी से (Catheter Directed Thrombolysis or Thrombosuction) केथेटर द्वारा रक्त के थक्के को बाहर निकालने का उपचार कीया जाता है ।

जो लोग रक्त को पतला करने की दवाई न ले सके या जिसमें दवा देने में रक्त प्रवाह का जोखिम हो उन लोगो में पल्मोनरी एम्बोलीझम को होने से बचाने के लिये आइवीसी फिल्टर (IVC Filter) डाला जाता है ।

4. एक्युट पल्मोनरी एम्बोलिज्म (Acute Pulmonary Embolism)

यह शीराओ में रक्त जम जाने तथा उसके वहां से छुटकर फेफड़े की मुख्य नली में चले जाने की वजह से होता है । यह एक घातक व जानलेवा बीमारी है । इसका तुरंत पता लगाकर इलाज करवाने में ही सबसे बडी समझदारी है । जितना ज्यादा बडा खुन का थक्का फेफड़ो में जाता है उतनी ही ज्यादा तकलीफ मरीज़ को होती है । इसीजी, इको, सीटी स्केन से इस बीमारी का पता लगाया जाता है ।

लक्षण

१. अचानक श्वास में तकलीफ होना
२. रक्त में ऑक्सिजन की मात्रा में कमी आना
२. धड़कन का बढ जाना
३. ब्लड प्रेशर का कम हो जाना

उपचार :

इस जानलेवा बीमारी का पता चलते ही तुरंत मरीज को इन्टेन्सीव केर युनीट में भर्ती करके ऑक्सिजन चालु की जाती है । खुन के थक्के को जो कि फेफड़ो में रक्त के संचार को अवरोध कर रहा है उसको गलाने के लिये खुन को पतला करने का इन्जेक्शन (जो हम साधारण तया हार्ट अटैक के मरीज़ को देते है) चालु किया जाता है । इंजेक्शन का असर आने से रक्त में ऑक्सिजन की मात्रा फिर से बढने लगती है व जान का जोखिम टल जाता है । यदी मरीज़ को खुन पतला करने के इन्जेक्शन से आराम नही मिलता तो नवीन केथेटर पद्धति (Pulmonary Thrombosuction) से रक्त के थक्के को बहार निकालने की प्रक्रीया की जाती है ।

सौजन्य **डॉ. सत्य गुप्ता**
एम.डी., डी.एम. कार्डीयोलोजी (सीएमसी वेल्लोर)
फेलो इन इन्टरवेन्शनल कार्डीयोलोजी (फ्रान्स)
फेलो इन अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी (FACC)
फेलो युरोपीयन सोसायटी ऑफ कार्डियोलॉजी (FESC)
रेडियल इन्टरवेन्शन्स के विशेषज्ञ
मोबाईल : +91-99250 45780
ई-मेल : satya.gupta@cims.me
www.drsatyagupta.com

डॉ. सत्य गुप्ता ने हाल ही में राजस्थान के एक Acute Pulmonary Embolism के साथ DVT से ग्रस्त मरीज का सफलतापुर्वक नयी पद्धति से उपचार किया । इस नवीन शोध को प्रस्तुत करने के लिये डॉ. सत्य गुप्ता को अमेरीका (शिकागो) में हुए शीराओ की बीमारीयों के वर्कशोप में आमंत्रित किया गया । विश्व के विभिन्न देशो से आये हुये चिकित्सको ने इस बीमारी का नई पद्धति से ईलाज करने के तरीके की काफी सराहना की ।

कमजोर हृदय के लिए नया ईलाज

कमजोर हृदय और हार्ट फेल्योर क्या है ?

बड़े पैमाने पर, जो हृदय की मांसपेशी के कमजोर होने तथा संपूर्ण शरीर में रक्त की पर्याप्त मात्रा को पंप करने में असमर्थ होने पर विकसित होती है । हृदपात की स्थिति समय के साथ बिगड़ती जाती है तथा आम तौर पर यह उच्च रक्तचाप, दिल का दौरा, वाल्व के रोग और हृदय रोग के अन्य रुपों अथवा जन्म दोषों के कारण होती है । उपचार न करने, पर्याप्त रक्त प्रवाह की कमी उत्तरोत्तर अंगो के विफल होने का कारण होती है, जिसके परिणामस्वरुप अनेकों चिकित्सीय जटिलताएं उत्पन्न होती हैं जो व्यक्ति को जीनव स्तर को बिगाड़ देती है तथा अक्सर मृत्यु भी हो जाती है ।

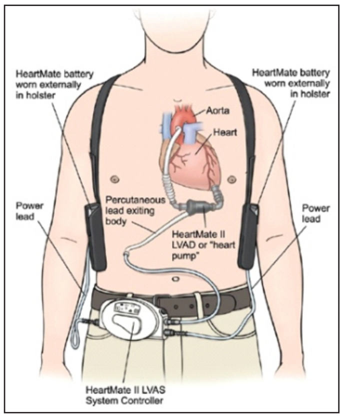

यदि आपकी या आपके किसी परिचित को हृदपात है, जिसे कंजेस्टिव हृदपात भी कहा जाता है, तो आप अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं । अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन के अनुसार पांच लाख से अधिक अमेरिकन हृदपात की बीमारी के साथ रह रहे हैं, जिनमें लगभग 6,70,000 नए मामलों की प्रति वर्ष पहचान की गयी ।

हृदपात से पीड़ित व्यक्तियों को अक्सर सांस और थकान की तकलीफ होती है । वर्षो तक अवरुद्ध धमनियों या उच्च रक्तचाप रहने से आपका हृदय आपके शरीर के लिए पर्याप्त रक्त को पंप करने हेतु काफी कमजोर हो सकता है । बदतर लक्षणों के रुप में, हृदपात की उन्नत स्थिति विकसित होती है । उन्नत हृदपात एक गंभीर स्थिति होती है । हालांकि आपको बदतर लक्षणों से राहत पाने के लिए तरीके मिल सकते है, जैसे कम सक्रिय होना, कम तरल पदार्थ पीना, तथा तकिए के साथ सोना, फिर भी आपका दैनिक जीवन का आनंद प्रभावित हो सकता है । उन्नत हृदपात को प्रबंधित करने की कुंजी नियंत्रण करना है । यह आपके उपर निर्भर करता है कि आप अपने डॉक्टर के सुझावों का पालन करें तथा स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक जीवन शैली में सुधार करें ।

VAD इलाज के बारे में

मिकेनिकल रक्तवाही सपोर्ट (MCS) रक्त पंप जिसे वेन्ट्रिक्युलर असिस्ट डिवाईस (VADs) कहा जाता है का प्रयोग रक्त प्रवाह को बेहतर करने के लिए करता है । यह शरीर में रक्त को पंप करने में हृदय की मदद करता है । यह हृदय को प्रतिस्थापित नहीं करता है । डिवाईस को प्रत्यारोपित करने के लिए रोगियों को सर्जरी करानी होती है । हृदय के प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षारत रोगियों को सर्जरी करानी होती है । हृदय के प्रत्यारोपण के लिए प्रतीक्षारत रोगियों के लिए, VAD उनको हृदय के दानकर्ता के मिलने तक जीवित बने रहने में मदद कर सकता है । इसे प्रत्यारोपण के लिए सेतु के रुप में जाना जाता है । कुछ उन्नत हृदपात के रोगी अन्य बीमारियों या उम्र के कारण प्रत्यारोपण के लिए प्रत्याशी नहीं हो सकते है । रोगी दीर्घकालिक VAD सपोर्ट से लाभान्वित हो सकते हैं । कभी-कभी VAD से रोगियों के हृदय बेहतर हो जाते हैं । ऐसा असलिए होता है क्योंकि पंप हृदय को आराम का अवसर देता है ।

LVAD क्या है?

लेफ्ट वेन्ट्रिक्युलर असिस्ट डिवाईस का प्रतीक LVAD है । यह मिकेनिकल डिवाईस है जो हृदय के द्वारा स्वयं रक्त को पंप करने में कमजोर होने पर संपूर्ण शरीर में रक्त को परिचालित करती है । इसे कभी कभी “हृदय की पंप” अथवा “VAD” कहा जाता है । हार्टमेट II लघुरुप में निर्मित प्रत्यारोपित करने योग्य LVAD है जोकि चिकित्सा प्रोद्योगिकी में महत्वपूर्ण खोज का प्रतीक है तथा शीघ्र ही विश्व में अपने प्रकार की सबसे व्यापक रुप में प्रयोग की जाने वाली डिवाइस हो गयी है ।

हार्टमेट II कैसे कार्य करती है ?

रोगी के बाएं वेन्ट्रिकल के पंपिग कार्य को लेने के लिए हार्टमेट II को डिजाईन किया गया है । डिवाइस को पेट में डायफ्राम के ठीक नीचे लगाया जाता है । इसे बाएं वेन्ट्रिकल, तथा महाधमनी, मुख्य धमनी से जोड़ा जाता है जो ऑक्सीजनयुक्त रक्त को बाएं वेन्ट्रिकल से संपूर्ण शरीर में ले जाती है । एक बाहरी, पहनने योग्य प्रणाली जिसमें एक छोटा नियंत्रण तथा दो बैटरी शामिल होती है एक बाहरी ड्राइवलाइन द्वारा संलग्न होती है । पहनने योग्य प्रणाली को या तो कपड़ो के अंदर या कपड़ो के उपर पहना जाता है ।

हार्टमेट II कैसे हृदपात के रोगी की मदद करती है ?

हार्टमेट II रोगी को अधिक आसानी से सांस लेने तथा कम थकानयुक्त महसूस करने में समर्थ करके, संपूर्ण शरीर में रक्त

प्रवाह को बहाल करने के लिए डिजाइन की गयी है । रोगी के अंग, LVAD प्राप्त करने से पहले प्राप्त कर रहे रक्त से अधिक रक्त प्राप्त करेंगे, और इससे उनके अंगो की कार्यप्रणाली में सुधार होने की संभावना होगी । LVAD प्राप्त करने के बाद, रोगी सामान्यतः अधिक उर्जावान महसूस करते है तथा सामान्य गतिविधियों को फिर से शुरु करने में सक्षण होते हैं जिन्हें डिवाइस के प्राप्त करने से पहले वे करने में असमर्थ थे ।

रोगी कैसे हार्टमेट II से सक्रिय हो सकते है?

यूंकि रोगी डिवाइस को प्राप्त करने से पहले कमजोर हृदय की गंभीर अवस्था में होते हैं, वे बहुत ही कमजोर होते हैं तथा आम तौर पर गतिविधि के स्तर में बहुत ही सीमित होते हैं । हार्टमेट II को प्राप्त करने के बाद, रोगी पानी से भीगने की प्राथमिक पाबंदी के साथ, अपनी मनपसंद दैनिक गतिविधियों के लिए लौट सकते है । बहुत से रोगी कार्य के लिए लौटने में तथा अपने शौक फिर से शुरु करने में समर्थ होते हैं जिन्हे करने के लिए वे वर्षों से समर्थ नहीं थे ।

क्या उन्नत हृदपात से पीड़ित रोगियों के लिए हार्टमेट II एक अच्छा उपचार विकल्प है ?

हां, अतीकमजोर हृदय के मामलों में हार्टमेट II को देखभाल का एक मानक माना जाता है । अध्ययनों ने दर्शाया है कि LVAD से उपचार किए गए उन्नत हृदपात के रोगी केवल दवाइयों के इलाज से उपचार किए जा रहे रोगियों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रह सकते हैं तथा काफी बेहतर जीवन स्तर का आनंद ले सकते है । यु.एस. में लगभग 50,000 – 1,00,000 हार्ट फेल्योर के रीग है जो LVAD से लाभान्वित हो सकते हैं ।

बैटरी कितनी अवधि तक कार्य करती है ?

LVADs को सपोर्ट करने के लिए प्रयुक्त नवीनतम पीढ़ी की बैटरियों को 14 घंटे तक रिचार्ज करने की जरुरत नहीं होती है ।

कौन हार्टमेट II ले सकता है ?

हार्ट फेल्योर से पीड़ित रोगी तथा जो चिकित्सा उपचार की सीमाओं से थक गए हैं वे प्राप्त करने के लिए प्रत्याशी हो सकते हैं । रोगी के हृदय को आराम देने तथा पंपिग के कार्य को लेने में समर्थ होने की डिवाइस की क्षमता के कारण, यह दिखाया गया है कि LVAD कमजोर हुए हृदय को अपने कुछ कार्य को फिर से करने के लिए अवसर प्रदान करता है । रोगियों को डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए यदि वे LVAD इलाज के लिये प्रत्याशी है ।

क्या हार्टमेट II लगे किसी व्यक्ति में अभी भी स्पंदन होता है ?

एक रोगी जिसे हार्टमेट II प्रत्यारोपित किया गया है उसका नाड़ी स्पंदन सामान्यतः घटा हुआ होता है । इसका कारण यह है कि हार्टमेट II रक्त हो हृदय से शरीर में हृदय गति के साथ लगातार ले जाता है ।

LVADs कितने बडे है ?

LVADs के आकार में अंतर होता है, लेकिन हार्टमेट II सभी FDA में सबसे छोटा - अनुमोदित LVADs माप लगभग 3 इंच लंबा तथा वजन लगभग 10 आउंस होता है ।

में कहा LVAD पा सकता हूं

विश्वभर में 200 से अधिक केन्द्र है जो हार्टमेट II को प्रत्यारोपित कर रहे हैं । अब सीम्स अस्पताल प्रत्यारोपण के लिए प्रमाणित है ।

डॉ. धीरेन शाह, डॉ. मिलन चग और डॉ. निरेन भावसार को यह प्रोसिजर के लिये संमति एवं सर्टीफीकेट मिला है ।

सीम्स कार्डियाक सर्जरी टीम

डॉ. धवल नायक	डॉ. मनन देसाई	डॉ. धीरेन शाह
+91-90991 11133	+91-96385 96669	+91-98255 75933

सीम्स कार्डियाक ओनेस्थेटीस्ट टीम

डॉ. हिरेन धोलकीया	डॉ. चिंतन शेठ	डॉ. निरेन भावसार
+91-95863 75818	+91-91732 04454	+91-98795 71917

सीम्स अस्पताल निम्नलिखित डॉक्टर्स का अपनी टीम में स्वागत करता है

इन्टरवेन्शनल कार्डियोलॉजिस्ट (हृदयरोग के विशेषज्ञ)

डॉ. जयराम बी. प्रजापति (मो) +91-82386 44222
डीएनबी (मेडीसीन), डीएनबी (कार्डियोलॉजी)

इन्टरवेन्शनल पीडियाट्रीक कार्डियोलॉजिस्ट (बाल हृदयरोग के विशेषज्ञ)

डॉ. दिव्येश सादडीवाला (मो) +91-82383 39980
एमडी (पीडियाट्रीक्स), एफपीसी

कन्सलटन्ट पीडियाट्रीशीयन और नियोनेटोलोजीस्ट

डॉ. स्नेहल एच. पटेल (मो) +91-99981 49794
एमबीबीएस, डीएनबी (पीडियाट्रीक्स)

भारत में पहली बार बिना ऑपरेशन हृदय में नए वाल्व का प्रत्यारोपण

सीम्स अस्पताल, अहमदाबाद में, भारत में पहली बार बिना ऑपरेशन किये हृदय के वाल्व का प्रत्यारोपण किया गया।

इस पद्धति से उपचार (Trans-Aortic TAVR) भारत में सबसे पहले सफलतापूर्वक सीम्स अस्पताल में डॉ. मिलन चग (कार्डियोलॉजिस्ट), डॉ. धीरेन शाह (कार्डियाक सर्जन) और डॉ. हीरेन धोलकिया-डॉ. चिंतन शेठ (कार्डियाक एनेस्थेटिस्ट)की टीम ने किया है। यूरोप के कई देशों में आज 30 से 40 प्रतिशत मरीजों में सँकरा हुआ एऑर्टिक वॉल्व टीएवीआर पद्धति से ओपन हार्ट सर्जरी के बिना बदला जाता है।

81 साल की उम्र के एक वयस्क के हृदय का सबसे महत्वपूर्ण बाईं तरफ का वाल्व (एऑर्टिक वाल्व) उम्र तथा कैल्शियम के जमने के कारण अत्यंत सँकरा हो गया था। इस कारण उसके हृदय की कार्यक्षमता घट कर 25 प्रतिशतरह गई थी। फेफड़े व किडनी के कार्य भी कमजोर पड़ गए और मरीज को सामान्य जीवन जीने में भी साँस लेने में बहुत दिक्कत थी।

इस प्रकार की वाल्व की तकलीफ में मरीज का वाल्व बदलना ही एकमात्र विकल्प रहता है, जिसके ओपन हार्ट सर्जरी की जरूरत पड़ती है।

परंतु इस मरीज में कमजोर हृदय, फेफड़े, किडनी व अधिक आयु के कारण ओपन हार्ट सर्जरी में जोखिम बहुत ज्यादा था। इसके विकल्प के रूप में यूरोप में खोजी गई नई पद्धति, जिसमें ऑपरेशन वगर नए वाल्व का हृदय

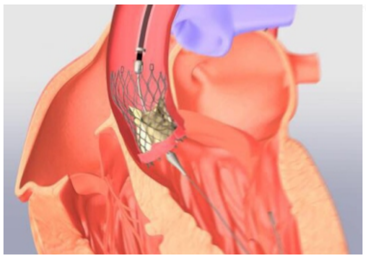

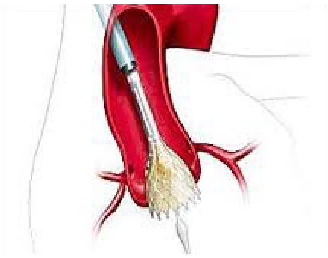

में प्रत्यारोपण करने की प्रक्रिया का उपयोग किया गया था, का उपयोग करने का निर्णय किया गया। इस पद्धति को टीएवीआर (ट्रांस कैथेटर एऑर्टिक वाल्व रिप्लेसमेंट) कहा जाता है। इसमें बिना ऑपरेशन के एंजियोप्लास्टी जैसी पद्धति से शरीर की रक्तवाहिनी की मार्फत कैथेटर केजरिए शरीर में वाल्व दाखिल किया जाता है और खराब वाल्व की जगह नए वाल्व का प्रत्यारोपण किया जाता है। इस मरीज की तमाम रक्तवाहिनियाँ भी कैल्शियम की जमावट से सँकर गई थी। इस कारण भारत में पहली बार ट्रांस-एऑर्टिक रूट से टीएवीआर किया गया।

इस प्रकार इस पद्धति का बड़ा फायदा यह है कि अत्यंत जोखिमकारक मरीज का उपचार भी ओपन हार्ट सर्जरी के बिना कम जोखिम में किया जा सकता है। सामान्यतः यह रोग बड़ी उम्र में होता है और ऐसे मरीज में हृदय के अलावा शरीर के अन्य अवयव भी कमजोर हो जाते हैं। इस कारण ओपन हार्ट सर्जरी बहुत ज्यादा जोखिमभरी होती है। ऐसे मरीजों में यह नई टीएवीआर पद्धति वरदान साबित हो सकती है।

राजस्थान रोयल्स
(आई.पी.एल. टीम के)
आधिकारीक मेडीकल पार्टनर
CIMS®
Care Institute of Medical Sciences
RAJASTHAN ROYALS
www.rajasthanroyals.com/partners.aspx
#CIMSHospital #RajasthanRoyals #AlwaysARoyal #IPL2015 #IPL8

सीम्स अस्पताल में रेडियोथेरेपी के लिए FFF (सपाट फिल्टर-रहित)

हाल ही में सीम्स कैंसर सेन्टर द्वारा रेडियोथेरेपी में हांसिल की गयी उपलब्धि को चिकित्सीय प्रयोग हेतु FFF (सपाट फिल्टर-रहित) का प्रयोग करने के लिए AERB अनुमोदन मिला है । लाईनर एक्सीलेटर से सपाट फिल्टर को हटाकर, सपाट किरण पुंज के भौतिक गुण के कारण अधिक खुराक की दर हांसिल की जा सकती है । अत्याधुनिक योजना प्रणाली का प्रयोग करने के साथ उन्नत उपचार जैसे SRS (स्टीरियोटेक्टिक रेडियो सर्जरी), SRT (स्टीरियोटेक्टिक रेडियो उपचार) तथा SBRT (फेफड़े तथा प्रोस्टेट के लिए स्टीरियोटेक्टिक बोडी रेडिएशन उपचार) को अब कम उपचार समय के साथ बहुत ही अनुकूलनीय खुराक वितरण हांसिल करने के लिए गैर-सपाट, उच्च खुराक दर की किरण पुंज को व्यवस्थित करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है ।

CIMS

रिनल (किडनी) ट्रान्सप्लान्ट
अब से सीम्स अस्पताल, अहमदाबाद मे

विश्व की अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी की सुविधा के साथ

1000 से भी अधिक रिनल ट्रान्सप्लान्ट
करने वाली अनुभवी और कुशल टीम

CIMS® Care Institute of Medical Sciences At CIMS... we care
सीम्स अस्पताल: शुकन मॉल के पास,
ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.

एपोइन्टमेन्ट के लिये फोन : +91-79-3010 1200, 3010 1008
(मो) +91-98250 66661

जुडवां बच्चो के साथ गर्भावस्था में हृदय की सर्जरी का दुर्लभ मामला

एक युवा महिला की जुडवां बच्चो के साथ पहली गर्भावस्था परिवार के लिए एक बडी ख़ुशी थी । तथापि, यह बुरे स्वप्न में बदल गया जब अचानक शुरु हुए बुखार और सांस लेने में तकलीफ के कारण हृदय में छिद्र (VSD) तथा मुख्य धमनी (महाधमनी) के रक्त का रिसाव हृदय के RT चैंबर (RSOV) में होने का पता चला ।

हृदयरोग विशेषज्ञ से परामर्श करने के बाद पांचवे महीने के दौरान अर्द्ध तत्काल, उच्च जोखिम वाली सर्जरी की योजना बनायी गयी ।

सीम्स अस्पताल के हृदय संबंधी सर्जन (बाल चिकित्सक), हृदय संबंधी ऐस्थेसिया विशेषज्ञ, स्त्रीरोग विशेषज्ञ, छिड़काव विशेषज्ञ तथा नर्सिंग स्टाफ की बहु क्षेत्रीय टीम ने इस ऑपरेशन को सफल बनाया ।

मां और शिशु की सतर्क उन्नत निगरानी, मां में हैमोडायनामिक निगरानी, शल्य चिकित्सा संबंधी विशेषज्ञता तथा बाद में शीर्ष विशेषज्ञ देखभाल इस सफलता की कुंजी है । मां और शिशु दोनो ठीक है ।

CIMS

लेप्रोस्कोपीक, हर्निया और ओबेसीटी (बेरीयाट्रीक) सर्जरी जागरुकता महिना*

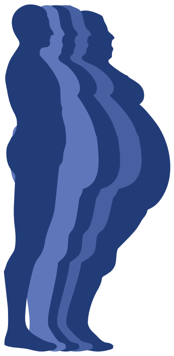

ओबेसीटी (मोटापा)

क्या आप जानते हो,

- ओबेसीटी (मोटापा) से कई प्रकार के रोग होते है और वंन्ध्यत्व का कारण बन सकती है ?
- ओबेसीटी सर्जरी से डायाबिटीस, हृदयरोग, बीपी, जोड़ो के दर्द जैसे रोगो को मीटाया जा सकता है ?

हर्निया

- ओपन सर्जरी के बदले लेप्रोस्कोपीक हर्निया सर्जरीसे कम दर्द और जल्दी रीकवरी आती है ।
- लेप्रोस्कोपीक सर्जरीसे जाली में इन्फेकशन (संक्रमण) की मात्रा कम होती है ।
- ओपन सर्जरी के बदले लेप्रोस्कोपीक सर्जरी से आपकी रोजाना जिंदगीमें जल्दी वापसी हो सकती है ।

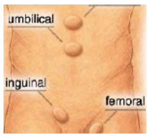

- निःशुल्क कन्सलटेशन और वजन कम करने की सलाह
- लेप्रोस्कोपीक हर्निया और बेरीयाट्रीक सर्जरी के लिये विशेष पैकेज

अपोईन्टमेन्ट आवश्यक (सुबह 9 से शाम 6 बजे तक)

+91-79-3010 1200, 3010 1008 (मो) +91-98250 66661

*सिर्फ मई, 2015 महिने के लिये

CIMS® Care Institute of Medical Sciences At CIMS... we care
NABH ACCREDITED
NABL

सीम्स अस्पताल: शुकन मॉल के पास,
ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060.

"Hriday Aur Dhadkan" Registered under RNI No. GUJHIN/2009/28021
Published 20th of every month
Permitted to post at PSO, Ahmedabad-380002 on the 1st to 7th of every month under
Postal Registration No. GAMC-1730/2013-2015 issued by SSP Ahmedabad valid upto 31st December, 2015

If undelivered Please Return to :

CIMS Hospital, Nr. Shukan Mall,
Off Science City Road, Sola, Ahmedabad-380060.
Ph. : +91-79-2771 2771-75 (5 lines)
Fax: +91-79-2771 2770
Mobile : +91-98250 66664, 98250 66668

“हृदय और धड़कन” का अंक प्राप्त करने के लिये : अगर आपको “हृदय और धड़कन” का अंक चाहिए तो इसका मूल्य ₹ 60 (12 अंक) है । इसको प्राप्त करने के लिये केश या चेक/डीडी सीम्स होस्पिटल प्रा. ली. के नाम से और आपका नाम और पुरे पते के साथ हमारी ओफिस हृदय और धड़कन डिपार्टमेन्ट, सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 पर भेज दे । फोन नं. : +91-79-3010 1059/1060

CIMS

सीम्स टीम और हमारे पर विश्वास रखनेवाले
हमारे मरीज़ का सहृदय आभार

Trendsetter Award In Customer Service Excellence Across India

Best Multispeciality Hospital Ahmedabad

सीम्स अस्पताल को ध टाइम्स ओफ इन्डिया हेल्थकेर अचीवर्स अवोर्ड 2014, दिल्ही में 2 अवोर्ड प्राप्त हुये (एक ही अस्पताल जिन्हे 2 अवोर्ड प्राप्त किया है)

CIMS Hospital : Regd Office: Plot No.67/1, Opp. Panchamrut Bunglows, Nr. Shukan Mall, Off Science City Road, Sola, Ahmedabad - 380060.
Ph. : +91-79-2771 2771-75 (5 lines) Fax: +91-79-2771 2770.
CIMS Hospital Pvt. Ltd. | CIN : U85110GJ2001PTC039962 | info@cims.me | www.cims.me

मुद्रक, प्रकाशक और संपादक डॉ. हेमांग बक्षी ने सीम्स अस्पताल की ओर से
हरिओम प्रिन्टरी, 15/1, नागोरी एस्टेट, ई.एस.आई डिस्पेन्सरी, दुधेश्वर रोड, अहमदाबाद-380004 से मुद्रित किया और
सीम्स अस्पताल, शुकन मॉल के पास, ऑफ सायन्स सिटी रोड, सोला, अहमदाबाद-380060 से प्रकाशित किया।